॥ जैन भवन ॥

# तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ३ जून २००५

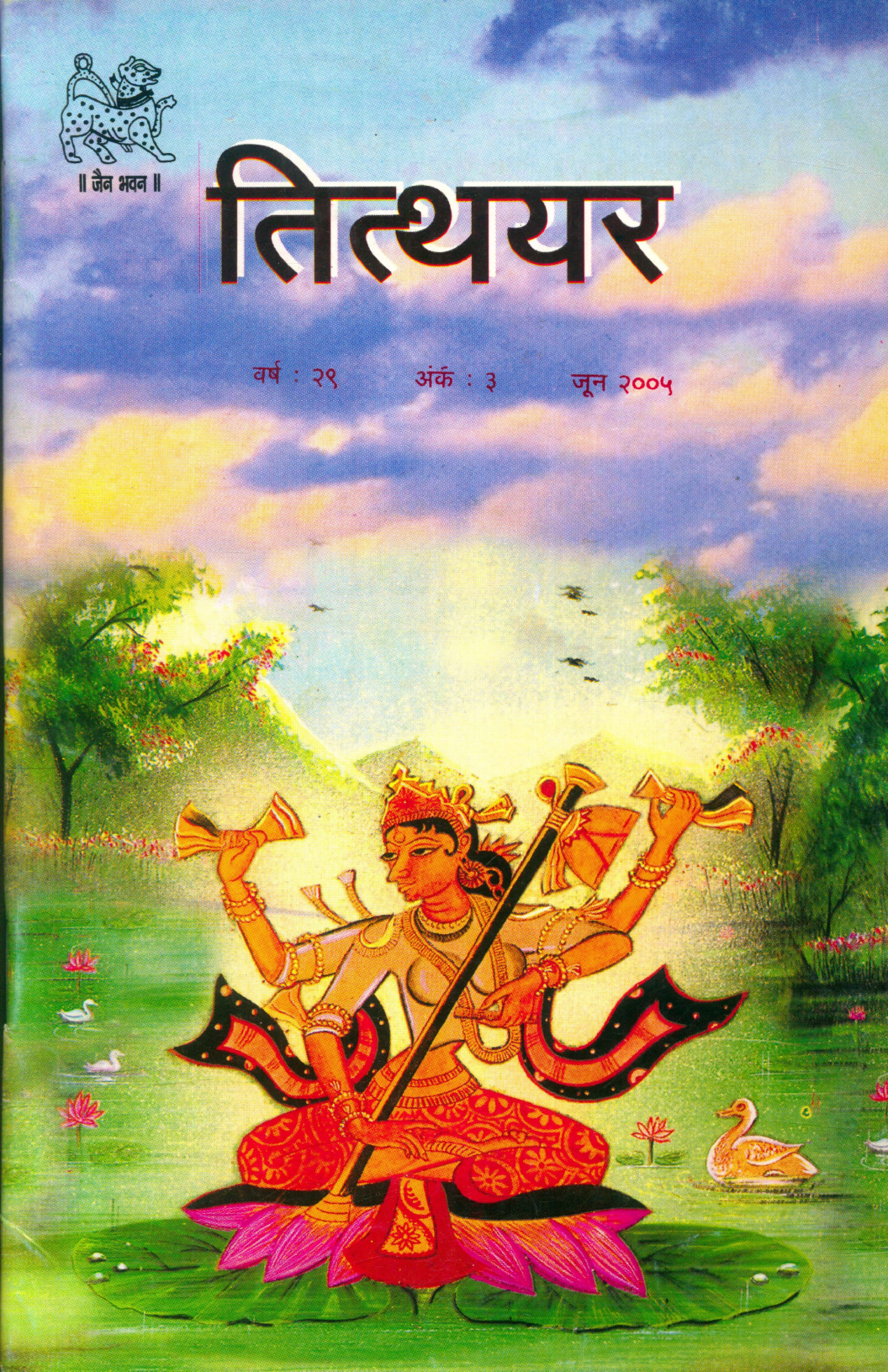

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

# Sethia Oil Industries Ltd.

***Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.***

**Plant**
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

**Registered Office**
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

**Executive Office**
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

# तित्थयर

*श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका*

वर्ष - २९ अंक - ३, जून, २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | लेख | लेखक | पृ. सं. |
|---|---|---|---|
| १. | भगवान महावीर का केवलज्ञान स्थलः | डॉ. सागरमल जैन | १९७ |
| २. | श्रावक और कर्मादन | डॉ. जीवराज जैन | २०२ |
| ३. | वैर का विपाक | | २१० |
| ४. | जैन गुरुओं की सेवा सुरक्षा की पहल करें | भूरचन्द जैन | २२१ |


**मूल्य - १०.०० रूपये**

**कवरपृष्ठ :** जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।


**Composed by:**
**Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007**

# भगवान महावीर का केवलज्ञान स्थलः

डॉ. सागरमल जैन

वर्तमान में महावीर के केवलज्ञान स्थल के रूप सम्मेदशिखर और गिरडीह के बीच तथा पालंगज के समीप बाराकर को महावीर के केवलज्ञान स्थल माना जाता हैं। यद्यपि पालंगज पुरातात्विक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थल है वहां पाल कालीन (लगभग १०वीं शताब्दी) का मंदिर भी हैं। उसी को लक्ष्य में रखकर संभवतः वर्तमान सम्मेतशिखर को २० तीर्थंकरों के निर्वाण स्थल के रूप में तथा बाराकर को महावीर के केवलज्ञान स्थल के रूप में लगभग १६वीं शताब्दी में मान्यता दी गई। मेरी दृष्टि में वर्तमान में जिसे श्वेताम्बर परम्परा महावीर का जन्मस्थल मान रही है, वहीं वस्तुतः महावीर का केवलज्ञान स्थल हैं। जैसा मैंने अपने आलेख भगवान महावीर का जन्म स्थल : एक पुनर्विचार में इंगित किया कि उस स्थल पर ई. सन् की प्रारंभिक शताब्दियों में भी कोई स्मारक रहा था और यह बहुत कुछ संभव है कि वह स्मारक महावीर के केवलज्ञान प्राप्ति स्थल की स्मृति में ही बनाया गया हो। वर्तमान में बाराकर को जो महावीर का केवलज्ञान स्थल माना जाता है वहां १६-१७ शताब्दी से प्राचीन कोई पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नहीं होते। जबकि जमुई क्षेत्र के अंतर्गत लछवाड़ के समीपवर्ती क्षेत्र में कम से सम ई. सन् के प्रारंभिक शताब्दियों के पुरातात्विक प्रमाण विशेष रूप से ईंट आदि स्वयं लेखक ने देखे हैं। आगमों में विशेष रूप से आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध एवं कल्पसूत्र में महावीर के केवलज्ञान प्राप्ति का जो संदर्भ उपस्थित है उसमें कहा गया है कि जंभियग्राम नगर के बाहर ऋजुवालिका के उत्तरीय किनारे पर शामक गाथापति के क्ष्टकरण (काष्टसंग्रह क्षेत्र) में वेयावत्त नामक चैत्य के उत्तर-पूर्व दिशा भाग में न अति दूर और न अति निकट शालवृक्ष के नीचे उकडू होकर गोदुहासन से सूर्य की आत्पना लेते हुए उर्ध्वजानु अधोसिर धर्म-ध्यान में निरत ध्यान

कोष्टक को प्राप्त शुवल ध्यान के अंतर्गत वर्तमान वर्धमान को निवृत्ति दिलाने वाला प्रतिपूर्ण अव्याहत निरावरण अनंत, अनुत्तर, श्रेष्ठ ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ।[१] सामान्यतया विद्वानों ने यहां यह मान लिया है कि भगवान महावीर को जंभियग्राम के निकट ऋजुवालिका नदी के उत्तरीय किनारे पर शामकगाथापति के खेत में सालवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने इसमें बहिया और कट्ठकरणंसी जैसे शब्दों की ओर ध्यान नहीं दिया हैं। वर्तमान में श्वेताम्बर परम्परा जिसे महावीर का जन्म स्थल मान रही है वह कच्चे मार्ग से वर्तमान जमुई से ७-८ कि. मी. से अधिक दूर नहीं हैं। इस मार्ग में ऊलाही नदी को दो-तीन बार पार करते हुए जाना पड़ता हैं। किन्तु यह मार्ग वस्तुतः मोटरगाड़ियों आदि के लिये नहीं हैं। वैसे यदि नदी के किनारे-किनारे खेतों में से यात्रा की जाय तो मेरी दृष्टि में यह मार्ग लगभग ७ कि. मी. से अधिक नहीं हैं। लेखक ने स्वयं कच्चे मार्ग से कार से इस क्षेत्र की यात्रा की हैं। यदि हम जंभियगाम को आधुनिक जमुई ही माने तो भी यह स्थान वहां से एक पहाड़ को पार करने पर ७-८ कि. मी. से अधिक नहीं रह जाता हैं। मेरी दृष्टि में बहिया का अर्थ अति निकट न समझ करके जंभियग्राम का बाह्य क्षेत्र समझना चाहिए। आज भी सामान्य रूप से किसी भी नगर के ८-१० कि. मी. के क्षेत्र को भी उसी नगर का बाह्य भाग माना जाता हैं। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सामान्यतया भगवान महावीर अपने साधनाकाल में किसी भी बड़े नगर के अति निकट नहीं रहते थे। कट्ठकरण शब्द का जो कृषि भूमि या खेत अर्थ लगाया जाता है वह मेरी दृष्टि में उचित नहीं हैं। कट्ठकरण का अर्थ जंगल या काष्ट संग्रह करने का क्षेत्र ऐसा होता हैं, कृषि क्षेत्र नहीं होता हैं। पुनः शामक को सामान्य गृहस्थ या कृषक न मानकर गाथापति कहा गया हैं। गाथापति सामान्यतया नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति को ही कहा जाता हैं। वस्तुतः भगवान महावीर केवलज्ञान प्राप्त के पूर्व शामक गाथापति के वन क्षेत्र में साधना हेतु स्थित थे। अतः महावीर का केवलज्ञान स्थल वस्तुतः ऋजुवालिका नदी के उत्तरीय किनारे का शामक गाथापति का वन क्षेत्र ही था न कि कोई खेत। पुनः वहां

सालवृक्षों के होने का तात्पर्य भी यही है कि वह सालवृक्षों का वन रहा होगा। अतः महावीर के केवलज्ञान स्थल को जंभिय (वर्तमान जमुई) के ऋजुवालिका नदी के (उलाई) उत्तरीय किनारे का वन क्षेत्र समझना चाहिए। लेखक ने लगभग १५ वर्ष पूर्व जब इस क्षेत्र की यात्रा की थी तब भी यह क्षेत्र तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ वन क्षेत्र ही था। उसके अतिनिकट लेखक को किसी ग्राम आदि की उपस्थिति नहीं मिली। यदि हम बहिया का अर्थ नगर का बाह्य भाग माने तथा उस स्थल को ऋजुवालिका नदी के उत्तर किनारे पर स्थित वन क्षेत्र के रूप में स्वीकार करे तो भगवान महावीर का केवलज्ञान स्थल वहीं सिद्ध होता है, जिसे आज श्वेताम्बर समाज महावीर का जन्म स्थल मान रहा हैं।

आगम में केवलज्ञान स्थल को जम्भीय ग्राम नगर का बहिर्भाग (बाहिया) कहा गया है। सामान्यतया बहिया या बहिर्भाग का अर्थ निकटस्थ स्थल माना जाता है किन्तु आगमों के अनुसार उस काल में २०-२५ किलोमीटर दूर स्थित स्थलों को भी उस नगर का बहिर्भाग ही माना जाता था। उदाहरणार्थ नालन्दा को भी राजगृह का बहिर्भाग (तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं नालन्दा नामं–ज्ञातासूत्र अध्याय ७ का प्रारम्भिक सूत्र) कहा गया है जबकि नालन्दा और राजगृह के बीच की दूरी लगभग २० किलोमीटर है। अतः वर्तमान लछवाड़ को जमुई (जम्भीय) का बाह्य विभाग माना जा सकता है। इस सम्बन्ध में कोई भी विप्रतिपत्ति नहीं है।

वर्तमान में महावीर के जन्म स्थान के रूप में मान्य लछवाड़ महावीर का कैवल्य प्राप्ति का स्थान है इसकी पुष्टि अन्य तथ्यों से भी होती है। प्रथमतः इसके समीप बहने वाली 'ऊलाई' नामक नदी 'उजुवालिया' का ही अपभ्रंश रूप है। क्योंकि प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से 'उजुवालिया' का उलाई रूप संभव है।

सर्वप्रथम लोप के नियमानुसार ज का लोप होने पर और व का उ होने पर तथा तीनों ह्रस्व उ का ऊ होने पर ऊलिया रूप होगा, इसमें भी ऊ - ल

- इ - य - आ (ऊलइया) में इ - य का दीर्घ ई होकर आ का स्थान परिवर्तन होकर ल के साथ संयोग होने से ऊलाई रूप बनता है। पुनः संस्कृत के कुछ ग्रन्थों में उजुवालिया (ऋजुवालिका) के स्थान पर ऋजुकूला रूप भी मिलता है। प्राकृत के नियमों के अनुसार ऋ का उ, मध्यवर्ती ज का लोप होने पर जु का उ और मध्यवर्ती क का लोप होने पर कू का ऊ उस प्रकार उ - उ - ऊ - ला में दोनों ह्स्व का दीर्घ ऊ में समावेश होकर ऊला रूप बनता है, जिसमें मुख सुविधा हेतु ई का आगम होकर ऊलाई रूप बनता है।

ज्ञातव्य है कि यही नदी अन्य जलधाराओं से मिलती हुई आगे चलकर जमुई के आसपास क्यूल के नाम से जानी जाती है यह भी कूल का अपभ्रंश रूप लगता है।

इससे यह सिद्ध होता है – ऊलाई जो जमुई नगर से आगे चलकर क्यूल के नाम से जानी जाती है ऋजुवालिका अथवा ऋजुकूला का ही अपभ्रंश रूप है अतः नदी के नाम की दृष्टि से भी महावीर का केवल ज्ञान स्थल वर्तमान लछवाड़ ही है। लछुवाड़ नाम भी लिछवीवाटक अर्थात् लिच्छवी का मार्ग या लक्ष्य वाट अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग ऐसा सिद्ध करता है। चूंकि इस प्रकार लिच्छवी महावीर का ज्ञान प्राप्ति या लक्ष्य प्राप्ति का स्थल होने से ही यह स्थल लछुवाड़ कहलाया होगा, इस सम्भावना को पूर्णतः निरस्त नहीं किया जा सकता है।

इस स्थान पर तीर्थ स्थापना नहीं होने का कारण भी स्पष्ट है, चूंकि आज भी यह स्थान निर्जन है उस काल में तो यह इससे भी अधिक निर्जन रहा होगा, फिर सन्ध्याकाल होते होते वहाँ कोई उपदेश सुनने को उपलब्ध हो यह भी सम्भव नहीं था। साथ ही इस क्षेत्र में महावीर के परिचितजनों का भी अभाव था अतः भगवान महावीर ने यह निर्णय किया होगा कि जहाँ उनके ज्ञातीजन या परिचितजन रहते हो ऐसी मध्यमा अपापापुरी (पावापुरी) में जाकर प्रथम उपदेश देना उचित होगा। ज्ञातव्य है कि आगमिक व्याख्याओं में

लछुवाड़ से मध्यदेश में स्थित मल्लों की राजधानी पावा की दूरी १२ योजन बताई गई, जो लगभग सही प्रतीत होती है। वर्तमान में भी लछुवाड़ से उसमानपुर–वीरभारी के निकटवर्ती स्थल को पावा मानने पर ऋजु या सीधे मार्ग से वह दूरी लगभग १९० किलोमीटर होती है। १५ किलोमीटर का एक योजन मानने पर यह दूरी १८० किलोमीटर होती है ज्ञातव्य है जैनेन्द्र सिद्धान्त कोश में एक योजन ९.०९ मील बताया है, इस आधार पर १ योजन लगभग १५ किलोमीटर का होता है। नक्शे में हमने इसे स्केल से मापकर भी देखा है जो लगभग सही है। इस प्रकार हमारी दृष्टि में महावीर का केवलज्ञान प्राप्त का स्थल जमुई के निकटवर्ती क्षेत्र लछवाड़ ही है, वर्तमान बाराकर और जामू नहीं है।

क्रमशः

——————००——————

# श्रावक और कर्मादान

डॉ. जीवराज जैन

श्रावक को जीविकोपार्जन के लिए जो शिल्प, धंधा, कार्य करना पड़ता है, उसके विभिन्न पहलुओं की क्या जानकारी रखना आवश्यक है, जिससे कि वो अनावश्यक हिंसा या कर्मबंधन से बच सके, शुद्ध भावों की ओर अग्रसर होकर संवर कर सके, निर्जरा कर सके? इसके लिए निम्नोक्त चिंतन, आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझ में आता है।

**१. सावद्य—निरवद्य विवेक** : भगवान् महावीर ने फरमाया कि पदार्थों का सर्वथा परित्याग करना देहधारियों के लिये संभव नहीं होता है, लेकिन वे आसक्ति का, ममत्व का सर्वथा परित्याग कर सकते है।

जैन-साधना निवृत्ति प्रधान है। अनगार साधु यानि श्रमण लोग विवेकपूर्वक सांसारिक प्रवृत्तियों का त्याग कर, विरती धर्म स्वीकार करता है। सर्व विरत साधु तो सभी प्रकार की अशुभ परिणति से विरत हो जाता है। श्रावक भी तप की साधना में चिन्तन द्वारा अपनी आसक्ति क्षीण रखता है। वह घर-गृहस्थी में रहता हुआ भी धर्म की आराधना कर सकता है। जो व्यक्ति केवल पदार्थों का त्याग करता है, किन्तु अपनी वासना को कम नहीं करता है, वह व्यवहार-दृष्टि से भले ही त्यागी हो, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है। वास्तव में त्यागी वही है, जो आसक्ति का त्याग करता है।

गृहवासी आसक्ति (आशा) का जितना त्याग करते हैं, उसी को धर्म कहा है, और वह आगार-धर्म कहलाता है। जहाँ तक विवेकपूर्वक आनन्द की अनुभूति हो, तब तक उपवास व्रत किया जाना है। जो तप-क्रिया ऐसा अनुभव नहीं कराती, वह मात्र देह-दण्ड हैं।

गृहस्थ के लिए अणुव्रत रूप धर्म का विधान किया गया है।

गृहस्थ (श्रावक) के १२ व्रतों में ५ अणुव्रत मूल-गुण रूप है। शेष व्रत-प्रत्याख्यान उत्तर-गुण रूप है।

**२. गृहस्थ का सत्कर्म** : जब तक मनुष्य का शरीर (देह) विद्यमान रहता है, तब तक उससे निरन्तर कर्म होता रहता है। यदि गृहस्थ भी कर्म करता हुआ धर्म का अधिकारी बन सकता है, तो प्रश्न उठता है कि फिर साधु कौन बनेगा?

*कर्म दो प्रकार का होता हैं। सत् और असत्। साधना के प्रारम्भ में असत्कर्म की निवृत्ति (त्याग) होती है। और जब साधना अपने चरम-रूप में पहुंचती है, तब सत्कर्म की भी निवृत्ति हो जाती है।

*गृहस्थ असत्कर्म की निवृत्ति करता है और सत्कर्म की प्रवृत्ति करता है। जिस गृहस्थ में मुक्त होने की जितनी भावना होती है, वह उतनी ही मात्रा में समता व सत्कर्म का आचरण करता है। और जितनी समता का आचरण करता है, उतनी ही मात्रा में धर्म का आचरण करता है। इस प्रकार वह गृहस्थी के कार्यों में लगा रहने पर भी धर्म की आराधना करने का अधिकारी है। जिसमें मुक्त होने की प्रबल इच्छा नहीं है, वह मुनि-धर्म को स्वीकार करने में असमर्थ रहता है।

**३. कर्मादान** : श्रावक के सातवें व्रत के अनुसार एक गृहस्थ १५ प्रकार के कर्मादान को नहीं अपनाने की भावना रखता है। उनका त्याग करता है। यह व्रत एक गुण व्रत है, जिसका उद्देश्य पहले ५ मूल-व्रतों (अणुव्रत) की रक्षा करना है।

*कर्मादान क्या है? जिन-जिन धन्धों में, व्यापार में व उद्योगों में ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का विशेष बंध होता है, उन्हें कर्मादान कहते हैं। ये सब घोर कर्म-बंध के हेतु हैं। चूंकि आजीविका कमाने के लिए व्यापार या उद्योग करना भी आवश्यक है, अतः जैन-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में इनका चयन

व संचालन के लिए क्या सिद्धान्त अपनाना चाहिए? एक सीधा उत्तर यह हो सकता है कि कोई भी धंधा न करो! स्वतः ही कर्मादान से बच जाओगे। लेकिन यह व्यावहारिक नहीं है।

*भगवान् महावीर ने अपने संदेश में सशक्त व्यावहारिक व प्रायोगिक जानकारी दी है कि अध्यात्म को अपना कर कैसे आचरण करें, कैसे व्यापार व धंधे करें !

**४. हिंसा के ३ रूप बताये गये हैं।**

a) जीवन जीते हुए हिंसा का हो जाना,

b) जीवन की रक्षा करते हुए हिंसा का होना और

c) हिंसा के उद्देश्य से हिंसा करना।

a) जीवन जीते हुए प्रतिक्षण अनेकानेक जीवों की हिंसा हो जाती है। जैसे श्वास लेने में, उठने-बैठने में, पाचन क्रिया में हिंसा होती है। किन्तु यह हिंसा, हिंसा की कोटी में नहीं आती है। इसमें न कोई संकल्प है और न ही इसे रोकने की शक्ति / सामर्थ्य है।

b) हिंसा का जो द्वितीय रूप है, उसमें जीवन-यापन का संकल्प है। आजीविका और संरक्षण का संकल्प है, हिंसा का नहीं। यद्यपि इसमें हिंसा है, किन्तु गृहस्थ साधक के लिए यह हिंसा अपरिहार्य और अनिवार्य है।

c) हिंसा का जो तृतीय रूप है, वह निकृष्टत्तम है। इसमें हिंसा विवेकरहित प्रमत्त-दशा में होती है।

**५. प्रमत्त योग :**

अशुभ भाव या मन की विषमता को ही आचार्य उमास्वाति ने प्रमत्त योग कहा है। इस योग से ही हिंसा, असत्य, चोरी आदि दोष रूप हैं, अन्यथा नहीं।

**५.१.** अतः निषेध किया गया है प्रमत्त योग पूर्वक हिंसा करने का। शेष हिंसा, जैसे आरम्भजा, उद्योगजा एवं विरोधजा का निषेध नहीं है। अपने

विवेक को जागृत रखना है। यत्नपूर्वक क्रिया करना ही धर्म है। विवेकपूर्वक जीवन की आवश्यक क्रियाएं जब साधक करता है तब फिर भी हिंसा हो ही जाती है। हालांकि उसका संकल्प हिंसा का नहीं रहता है।

मनोरंजन के लिए, स्वाद के लिए, स्वामित्व के अहंकार की पुष्टि के लिए जो हिंसा होती है, वो लोभ आदि कषाय के वश होती हैं।

५.२ जो हिंसा जीवन-यापन के लिए आवश्यक नहीं है, वह अनर्थकारी हिंसा है। इसके त्याग से या इसका विवेक रखने से, एक साधक अहिंसा के मार्ग पर बहुत प्रगति कर सकता है।

**६. जीवन–यापन :** शास्त्र में वर्णन आता है कि जीवन-यापन के व्यापार के लिए खुलासा करने के लिए मेघकुमार ने भगवान महावीर से पूछा था कि हे भगवन् ! कृषि, वाणिज्य, रक्षा, शिल्प आदि विभिन्न प्रकार के कर्म करता हुआ गृहस्थ सत्प्रवृत्ति कैसे कर सकता है?

भगवान् : मैंने हिंसा के दो प्रकार बतलाये हैं। अर्थजा और अनर्थजा।

गृहस्थ अनर्थजा यानि अनावश्यक हिंसा का जितनी मात्रा में त्याग कर सकता है, उतनी मात्रा में उसकी प्रवृत्ति सत् हो जाती है। भगवान ने ऐसी सुन्दर आचार नीति का उपदेश दिया है कि जीवन के लिए कोई भी आवश्यक कार्य भी न रुके और आत्मा बंध से लिप्त भी न हो।

**६.१ अर्थजा :** आर्थिक बुराइयों से बचने के लिए ३ व्रतों का भी प्रतिपादन किया है। अपने लिये, परिवार के लिए, समाज व राज्य के लिए जो हिंसा की जाती है, वह अर्थजा हिंसा कहलाती है। जैसे, परस्पर एक-दूसरे के लिए सहयोग करना समाज का आधार भूत तत्व है। इस दृष्टि से समाज के लिए जो हिंसा की जाती है, उसे अर्थजा हिंसा कहा जाता है। युद्ध के समय स्वयं या देश रक्षा के लिए की गई हिंसा भी इसी श्रेणी में आती है। इसमें प्रधान साध्य है समभाव।

संकल्पना हिंसा को छोड़कर, आरम्भजा, उद्योगजा व विरोधजा हिंसा का श्रावक त्यागी नहीं है। उसे केवल उद्योग व व्यापार में हिंसा को हिंसा समझते हुए रहना चाहिए, अन्यथा उसमें करुणा का स्रोत सूख जायेगा। हिंसा चाहे हमें विवशता में करनी पड़े, लेकिन उसके प्रति आत्मग्लानि व हिंसित के प्रति करुणा बनी रहे, ऐसा प्रयास रहना चाहिए।

कोई भी हिंसा, कहीं पर भी निर्दोष नहीं होती है (युद्ध में भी)। परन्तु लेप-शक्ति में, प्रगाढ़ता में अन्तर होता है। आसक्त का लेप गाढ़ा और अनासक्त का लेप मृदु होता है।

अर्थजा हिंसा करते वक्त जो व्यक्ति प्रबल आसक्ति, ममत्व नहीं रखता, वह चिकने कर्म-पुद्गलों से लिप्त नहीं होता।

यानि समाज द्वारा सम्मत कर्म करता हुआ व्यक्ति यदि मन को अनासक्त रखे तो वह दृष्टि लेप से लिप्त नहीं होता है।

सम्यग् दृष्टि बनने का सार यही है कि वह अनर्थ यानि प्रयोजन बिना प्रवृत्ति नहीं करता और प्रयोजनवश जो प्रवृत्ति है, उसमें वो आसक्त नहीं रहता है। जिससे कर्म का लेप गाढ़ा नहीं होता है। कवि ने कहा है कि

सम्यक् दृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल,
अन्तर सू न्यारो रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल।

**६.२ संकल्पजा हिंसा :** मन के विचारों से जानबूझकर की गई भाव हिंसा ही संकल्पी (संकल्पजा) हिंसा है। यह गृहस्थ, साधु कभी के लिए त्याज्य है। क्योंकि निश्चय दृष्टि या सैद्धांतिक दृष्टि से हिंसा भावों में ही है, बाहर में हिंसा नहीं है। अगर मारने का किसी ने संकल्प किया है तो बस इसी में हिंसा हो गई! जिसको मारना था, वह मरे या नहीं मरे, यह महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्वपूर्ण है व्यक्ति का संकल्प।

उदाहरण स्वरूप समझाया गया है कि एक शिकारी ने एक दौड़ते हुए हिरण को मारने का संकल्प किया और अपना तीर उसकी तरफ छोड़

दिया। हिरण भाग जाने से बच गया। लेकिन वह तीर उधर खड़े एक व्यक्ति को अनजाने में लग गया और वह मर गया। यद्यपि हिरण बच गया, लेकिन शिकारी हिरण का हत्यारा है। महावीर की दृष्टि में वह शिकारी मनुष्य का हत्यारा नहीं है।

**७. कर्म बंधन :** कर्म बंधन दो प्रकार के बताये गये हैं। अविरती और प्रवृत्ति । अविरती क्रिया में कोई परिणाम नहीं, कोई व्रत नहीं होता है। अविरती क्रिया निरंतर होती रहती है, जो कर्म बंध का या हिंसा का अनजाने में ही प्रमुख कारण बनती है। अतः गृहस्थ को परिवार व धंधों में, तथा गमनागमन व उपभोग-परिभोग में, हमेशा परिमाण / सीमा निर्धारित करनी चाहिए। इससे अविरती कर्म की यानि अनर्थदण्ड की हिंसा से सहज निवत्ति हो जाती है।

प्रवृत्ति क्रिया सोच समझ व संकल्प से की जाती है। श्रावक को इसमें कैसा विवेक रखना चाहिये ?

श्रावक : दो प्रकार के कहे गये हैं। एक सामान्य दर्जे का गृहस्थ और दूसरा विशिष्ट श्रावक।

अर्थोपार्जन के लिए सामान्य श्रावक को भी धंधे व शिल्प का चुनाव करते वक्त यह विवेक रखना चाहिए कि कोई महारम्भी, त्रसकायी हिंसा या पंचेन्द्रिय-हिंसा वाला कर्म न हो। फिर उसके परिपालन में अल्पीकरण व मर्यादा का प्रयास कर सकता है।

विशिष्ट श्रावक तो अर्थोपार्जन की भी मर्यादा रखता हैं अपनी आवश्यकताओं का, खर्च का इतना अल्पीकरण कर लेता है कि अर्थोपार्जन में वह लोभ से बच सके। वर्तमान काल के एक वास्तविक श्रावक की सोच का उदाहरण-गुरूभगवंत इस प्रकार फरमाते हैं कि ऐसा ही एक

i श्रावक नित्य सुबह उठकर यह प्रार्थना करता है कि हे भगवान्, मुझे भगवान महावीर के रास्ते पर चलने के लिए सक्षम बनने की योग्यता दो। तथा कामना करता है कि

ii मुझे ज्यादा कमाई मत दो, जिससे मैं अतिपाप से बच सकूं।

उसका नियम यह है कि महीने में १८००० रूपये से ज्यादा नहीं कमाना। यदि थोड़ा बहुत ज्यादा हो भी जाये तो उससे ज्यादा के रुपये अतिरिक्त दान में दे देना। कमाई का उपयोग इस प्रकार करता है।

१८,००० रु० में से १००० रु० सत्कार्य में दान देना,

३,००० रु० भविष्य की आपात स्थिति के लिए जमा करना,

१२-१३ हजार रु० में घर-व्यवस्था चलाना।

१००० रु० १ साल की अवधि को आकस्मिक व्यय के मद में (Short term) रखना।

**८) उदरपूर्ति की व्यवस्था :** प्राचीन काल की सामाजिक व्यवस्था में धंधे और कर्म विभिन्न वर्गों में बंट गये थे। इसमें वर्ग, कुल व जाति का ध्यान रखा जाता था। उसी के अनुरूप कर्मादान की व्यवस्था भी की गई थी। साधारण चिंतन करने से तो

फोड़ी-कम्मे में दालें-बनाना भी परिगणित हो सकता है! लेकिन ऐसी स्थिति में तो गृहस्थी के अनेकों अनिवार्य दैनिक कार्यों को भी महारंभी कर्मादान मान्य करना पड़ेगा।

व्रत धारण न करने से मनुष्य उन्मुक्त रहता है। व्रत ग्रहण करते ही बंधन में आना पड़ता है। ऐसी स्थिति में गृहस्थी के सामान्य कार्यों को भी अगर श्रावक के लिए कर्मादान कहकर त्याज्य ठहरा दिया जाय, तो ठीक नहीं होगा, व्यावहारिक नहीं होगा।

शास्त्र में वर्णन आता है कि शकडाल के पुत्र के बर्तनों की ५०० दुकानें थी। वह कुम्हार का काम करते हुए भी अच्छा श्रावक था।

दंक नामक एक प्रजापति (कुम्हार) भी अच्छा श्रावक हुआ था, जिसने सुदर्शन साध्वी जी की श्रद्धा शुद्ध की थी। वह मिट्टी के बर्तन की दुकान करता था। उन्हें पकाता भी था। लेकिन वह संतोषी था तथा उसने भोगाभोग की मर्यादा कर ली थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भगवान् ने अनैतिकता के लिए दण्डविधान नहीं बल्कि धर्म का सहारा लिया। हृदय परिवर्तन पर विशेष जोर दिया है। विचारों को सम्यक् बनाने पर जोर दिया है। मानव जीवन इतना तुच्छ नहीं है कि दो पैसे कमाने के लिए दुर्व्यसन और हिंसा को प्रोत्साहन दिया जाय। ऐसे धंधों को व घातक पदार्थों के व्यापार को कुत्सित कर्म करार दिया था। उन्होंने यह आह्वान नहीं किया कि तुम स्वर्ग में जाकर सुख-शान्ति प्राप्त करो। उन्होंने तो कहा है कि तुम जहाँ रहते हो, वहीं पर स्वर्ग का वातावरण बनाओ। यदि तुम इस दुनिया में देवता बन सकते हो, तभी तुम्हें देवलोक मिल सकता है। अध्यात्म को अपना कर कैसा आचरण करें, उन व्यावहारिक चीजों की उन्होंने साफ जानकारी दी है। उनका संदेश व्यावहारिक, प्रायोगिक व अपने जीवन में उतारने का जमीनी संदेश है। इसको सरल भाषा में आम आदमी के लिये इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं :-

१) परिश्रम करो, सादगी से रहो,

२) चिन्तन-मनन (स्वाध्याय) भी करो और अध्यात्म अपना कर जीवन का संचालन इस प्रकार करो कि आसपास का वातावरण स्वर्ग जैसा बनने में मदद मिले।

३) छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए दूसरों के दास मत बनो।

४) अर्थ और काम पर लगाम रखकर समभाव की साधना करो।

वास्तव में जब महावीर के सिद्धान्तों के मर्म पर चिंतन करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे कि उन्होंने इन सिद्धान्तों का उपदेश इसी युग को लक्ष्य में रख कर दिया हो। यद्यपि धर्म-सिद्धान्त का वर्णन शास्त्रों में होता है, लेकिन मूर्त्त व्यावहारिक रूप तो उसके अनुयायियों के आचरण से ही प्रकट होता है।

----------X----------

# वैर का विपाक

दासी को साथ में लिए वे अन्तःपुर में लौट आए। रानी ने महाराजा को समझाने का अत्यन्त प्रयत्न किया कि यह पुत्र अच्छी घड़ी नहीं जन्मा है, इसका त्याग कर देने में ही कुटुम्ब की कुशल है। परन्तु कर्मफल के विषय में अचल श्रद्धा रखने वाले सिंह महाराजा ने बार बार बस एक ही उत्तर दिया।

यदि मेरा अथवा तुम्हारा अनिष्ट होने का है तो वह किसी न किसी रीति से हुए बिना नहीं रहेगा। इससे बचने के लिये एक निर्दोष शिशु का बलिदान देना भारी कायरता है।

सिंह महाराजा ने और भी कहाः मान लो कि पुत्र बड़ा होकर हमारे विरुद्ध विद्रोह करे, तो भी जहां तक हममें शक्ति है वहां तक यह हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा? बहुतेरे राजकुमार राज्य के अथवा सत्ता के लोभ से पिता के विरुद्ध मोरचे बांधते हैं, गुप्त और मलिन षडयंत्र रचते हैं, यह हम सब जानते हैं। परन्तु कुमार कुछ बड़ा और समझदार हो जाए और शक्तिशाली बने, हम स्वयं इसके हाथ में राजदंड सौंपकर निवृत्त हो जायेंगे तो दोनों का ही अहित होने से रुक जाएगा। इसके विपरीत यदि हम अनिष्ट की आशंका से भयभीत रहेंगे तो सारी दुनिया को ही हमें शत्रु मानना होगा। और ऐसी आशंकावाला मनुष्य कहीं भी सुख और शांति से रह नहीं सकता है। अतः मेरी तो यही सलाह है कि तुम इस भय को एकदम ही निर्मूल कर दो।

आत्मा का अहित करने की तो किसी में शक्ति नहीं है। यह बात भी सिंह महाराज ने रानी को भली भांति समझाई। महाराज का रानी को दिया यह उपदेश सफल होता हुआ प्रतीत हुआ। पुत्र के प्रति माता का वात्सल्य जागृत हो गया।

दोनों ही बहुत देर तक मौन और एक दूसरे की ओर देखते रहे। रानी को अपनी भूल का पछतावा हो रहा हो ऐसा उसकी मुखमुद्रा बता रही थी।

सिंह महाराज थोड़ी ही देर बात भूला स्वप्न फिर से देख रहे हो इस प्रकार कहने लगेः हे महारानीजी! आपको वो दिन स्मरण आते हैं कि जब तुम मात्र कुमारी कुसुमावली थीं और उद्यान में अपनी सखियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए निकली हुई थीं। मुझे देख तुम घबराई हुई सी भाग जाना चाहती थी परन्तु तुम्हारे पैर उठते ही नहीं थे, तुम बार बार मुड़कर पीछे की ओर दख रही थी और तुम्हारी सखियों ने भी तुम्हारी विकलता देख तुम्हारा मजाक उड़ाया था।

और आपने उस हंसिनी के पास ही हंस का चित्र अंकित किया था वह भी मैं नहीं भूली हूं। ऐसा कहते कुसुमावली ने पादपूर्ति कर दी।

मैं यही तो कहने जा रहा था। हमारे जीवन की वसंत वह थी और वसंत में ही हमारा प्रथम परिचय हुआ था। जैसे दिन बीतते गए हमारी यह स्नेहग्रंथी अधिक मनोरम और संगीन होती गई। इस स्नेह के परिपाक जैसा ही अपने यहां पुत्ररत्न का जन्म हुआ है। इतने गाढ़ स्नेह का परिणाम आप कल्पना करती हो वैसा भयानक होगा यह मैं कल्पना भी नहीं कर सकता हूँ। मेरी बुद्धि में यह बात उतरती ही नहीं है। जिसने किसी को दुःख नहीं दिया हो उसे दुःख देनेवाला इस विश्व में कोई हो ही नहीं सकता है। फिर भी यदि ऐसा कुछ भी घटित होता दीख पड़े तो उसमें प्रारब्ध का ही कोई संकेत है ऐसा मान खुली छाती और प्रफुल्ल हृदय से हमें उसका सत्कार करना चाहिये। क्या यही हमारा कर्तव्य नहीं है?

कुसुमावली सिंह कुमार को प्रेमी और कलाकार तो मानती ही थी, परन्तु आज की इस वार्ता से वह तत्वक और चिंतक भी है ऐसा भी उसे पूरा पूरा विश्वास हो गया।

पिता कठोर हृदय का हो सकता है। परन्तु माता तो पुत्र पर प्रत्येक पल वात्सल्य का ही सिंचन करती है। माताओं के इस विराट संघ में वह अपवादरूप बने इसके लिए रानी को बहुत ही पश्चात्ताप हुआ। पति को

जीवन के प्रति निश्चिन्तता और कर्मफल के विषय में दृढ़ता देखकर अपनी भयभीत और श्रद्धाहीन स्थिति के लिये रानी को बहुत ही खेद हो रहा था।

दासी के पास से उसने पुत्र को ले लिया। शिशु के स्पर्श मात्र से उसके हृदय में दबा हुआ वात्सल्य का श्रोत बह चला। स्वप्न में अथवा दोहद में इस बालक का क्या दोष हो सकता था? निश्चय ही क्षणिक आवेश में आकर पुत्र को सदा के लिये त्याग कर देना और उसका मुख तक नहीं देखने का निश्चय कर बैठना एक प्रकार के उसके दुर्बल मनोभाव का ही धुंआ था, ऐसे उसको विश्वास हो गया। सिंह महाराजा के उपदेश ने उस धुएं को देखते देखते ही बिखेर दिया और मातृवात्सल्य का सूर्य चमक उठा।

मैंने मरते हुए को, जहां तक संभव हुआ, मरा तक भी नहीं कहा है। प्राणी मात्र के प्रति करुणा और ममता ही मैंने पोषित की है। फिर मेरी कोख से कुपुत्र कैसे जन्म सकता है? ऐसा विचारते विचारते वह निश्चिंत हो गई।

विराग अथवा निर्मल उपशम मात्र धर्ममंदिर में ही जागृत हो ऐसा नियम नहीं है। रणक्षेत्र में भी जहां कि रक्तपिपासा योद्धाओं को विजय अथवा स्वर्ण प्राप्ति का नशा चढ़ाती तांडव करती हो वहां भी कभी कभी विराग का श्वेत पद्म खिल उठता है।

महाराज सिंह ने सैनिकों को आदेश किया था कि किसी को रंच मात्र भी उतावलापन नहीं बताना है। सेना की छावणी में किसी को आवेशमय वातावरण सर्जने की आवश्यकता नहीं है और जहां तक दूसरा आदेश नहीं प्राप्त हो वहां तक किसी को शस्त्रास्त्र का स्पर्श तक भी नहीं करना है।

सेनापति और सैनिकों को भी लगा कि सिंह महाराज की बुद्धि को काठ मार गया है। बात ही बात में वे इसीलिए तो विचित्र आदेश निकालते रहते हैं। समरांगण में ही उन्मत्त होकर यदि नहीं घूमा फिरा जाय तो क्या घर और बाजार में घूमा जाय? और यदि शस्त्रों को हाथ तक नहीं लगाने की मनाही करनी थी तो फिर यहां तक भी हमें सबको क्यों घसीट लाया गया है? कल प्रातःकाल ही यह आदेश दिया जाएगा कि कोई भी सैनिक कुछ भी

लूट-खसोट नहीं करें। किसी को वे हाथ तक भी नहीं लगाएं। हम युद्ध करने निकले हैं कि तीर्थयात्रा करने? सैनिक यहां भी उन्मत्त नहीं बनें और शत्रुओं को घायलकर हाथ ठंडे करे, और सोना-चांदी जो कुछ मिले वह घर नहीं ले जाएँ तो क्या बाबाओं की भांति समाधि लगाकर बैठ जाएं? इससे तो कुमार ही हमारे नायक हुए होते तो अच्छा रहता। चाहे जो कहा जाए परन्तु सिंह महाराज का रक्त तो अब बुढ़ापे का ही है ना?

महाराज सिंह युद्ध वीर माने जाते हैं, परन्तु इनको युद्ध का शौक अब निकल गया है। राज्य की सीमा का विस्तार करने की भी कोई लालसा इनके अंदर में नहीं जल रही है और न अब इन्हें अपने बल का डंका बजवाने का ही कोई शौक रह गया है।

फिर भी महाराजा को आज युद्ध में उतरने की आवश्यकता पड़ गई है। दो-दो बार जब इनकी सेना पराजित होकर लौट आई तो इनका मात्र रक्त उबल उठा। सीमा प्रान्त का एक छोटा सा मंडलेश यदि ऐसा शक्तिशाली और उद्धत बन जाए तो फिर सिंह महाराज के क्षत्रियत्व का फल ही क्या? ये प्रजा के पालनहार फिर कैसे? उन्होंने तो स्वयं वैर-विष का कोई कारण दिया नहीं था?

युद्ध की भूमि पर महाराजा पहुंचे और अगले दिन से शत्रु का सामना करने की सब तैयारियां हो चुकी थी कि इतने ही में महाराजा एकदम उदासीन होकर बैठ गए।

घटना इस प्रकार घटी कि महाराजा छावनी में घूमकर लौट रहे थे कि उन्होंने एक विचित्र दृश्य मार्ग में देखा।

एक काला नाग, मेढ़क को निगलने के लिए अपना फन एक ओर पछाड़ रहा था तो दूसरी ओर नाग को भक्षण कर जाने को टीटोड़ा पक्षी यत्न कर रहा था। यहीं नहीं पर इसी टीटोड़ा पक्षी को एक अजगर आसानी से गटक जाने का प्रयत्न कर रहा था। सांप मेढ़क को छोड़ नहीं सकता था, और टींटोड़ा से अपना बचाव करने में भी वह असमर्थ था। अन्त में तो ये सारे ही अजगर के उदर में समा जाने वाले थे। पास ही एक व्यक्ति खड़ा हुआ कह

रहा था वाह विधाता। यह कैसी लीला? महाराज ने विचाराः मैं इस युद्ध में किसी को बचाना चाहता भी होऊं तो किसको किस रीति से बचा सकता हूं? बस इस समय निराश होकर ही अपनी छावनी में लौट आए थे। परन्तु यह अचिंत्य घटना उनके अंतरमन पर चोटें मार रही थी।

अकस्मात् दृष्टिगत हुई इस घटना सृष्टि का ही क्या सामान्य व्यवहार है? अथवा इसमें भी कुछ गहन-गंभीर अर्थ होगा? यही विचारते हुए महाराजा को लगा कि समस्त संसार में अजगर-सांप-मेढक और टींटोड़ा की ही लीला का खेल हो रहा है। इन जंगली प्राणियों की अपेक्षा हम लोग किस प्रकार उन्नत गिने जाने का दावा कर सकते हैं? निर्दोष प्रजाजनों को बहुत बार अधिकारी त्रस्त करते हैं–उनका शोषण करते हैं। इन अधिकारियों का राजा स्वयं शोषण करता है। और हम सब को अपने अगाध उदर में समा लेनेवाला काल याने मृत्यु तो सामने खड़ी ही है। यह सारा जगत मृत्यु की डाढ़ में फंसा हुआ है, फिर भी प्रत्येक दूसरे को एक ही ग्रास में खा जाने को कितना आतुर दिखाता है? उसकी दृष्टि में मृत्यु जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। परन्तु निश्चित से निश्चित यदि कोई वस्तु इस संसार में है तो वह काल-मृत्यु है। फिर भी पामर मनुष्य इसको अनिश्चित मान आराम से सो सकता है।

इसी विचारसरणि में गोते खाते महाराजा को सारी रात नींद नहीं आई। एक रात में ही उनका अंतरंग संवेग रंग से रंग गया। उनका यह रात्रीजागरण उन्हें सम्यग् दृष्टि दे गया।

दूसरे दिन महाराजा अपने मंत्री को यह बात कहते हुए अपने तंबू में बैठे थे और मंत्री भी महाराजा की बातें समभाव से सुन रहा था कि वहां एक संदेशवाहक ने प्रवेश किया, और इस प्रकार कहने लगा ।

महाराज ! दुर्मति राजा आपको मिलना चाहता है।

कौन ? दुर्मति स्वयं ? महाराजा और मंत्री दोनों ही को यह आश्चर्य जनक प्रतीत हुआ। बीती कल तक शत्रुता से चिपटा रहनेवाला शत्रु क्या

संधि करने आ सकता है? महाराजा के मन में तर्कवितर्क की तरंगमाला चल पड़ी। थोड़ी देर बाद ही उन्होंने कहा : आने दो।

कर्मचारी दुर्मति को भीतर ले आया। दुर्मति के पास इस समय क्षत्रियोचित कोई भी शस्त्रास्त्र नहीं था। हाथ में मात्र एक कुल्हाड़ी थी।

प्रवेश करते ही वह महाराजा के पैरों में गिर पड़ा। ऐसे प्रबल पराक्रमी और फिर भी साधु-प्रकृति के महान् महाराजा के विरुद्ध निष्कारण उपद्रव करने के दोष का भारी पश्चात्ताप दिखाता हो ऐसा उसने तब अभिनय किया और फिर बोला :

मुझे आप जीवनदान दें अथवा मारें यह दोनों अभी आपके हाथ में हैं। मेरी गर्दन मारना हो तो यह कुल्हाड़ी भी मैं साथ ही ले आया हूँ। अब आपको जो उचित प्रतीत है वैसा करें।

सिंह महाराजा अभी थोड़ी ही देर पूर्व ही तो काल की करुण लीला की ब्रात कर रहे थे। अभी उनके अंतर में उत्कट उदासीन संसार की क्षणभंगुरता उभरी हुई थी। वे स्वयं किसी के काल बनें, किसी के प्राण हरें, यह इस समय संभव ही नहीं था। महाराजा ने दुर्मति को अभयदान देकर मुक्त कर दिया। बिना युद्ध के ही महाराजा की विजय हो गई। जिनके हाथ कुछ करने को उतावले हो रहे थे, गांव लूटने को आतुर हुए जो बैठे थे, वे सब सैनिक निराश हो गए। उन्हें यह एकदम सस्ती विजय बिलकुल ही अच्छी नहीं लगी।

राजधानी में पहुँचकर महाराजा ने चार पांच दिन में ही निवृत्त होने का अपना संकल्प जाहिर कर दिया। अजगर और मेंढक वाली घटना ने संसारचक्र की क्रूरता और कारुण्य का जो मान इन्हें करा दिया था उसमें कोई परम सौभाग्य का ही संकेत हो ऐसा उन्हें प्रतीत हुआ।

मंत्री को बुलाकर उन्होंने कहा : अब मैं निवृत्त होना चाहता हूँ। धर्मकार्य के सिवा अन्य किसी भी प्रवृत्ति में अब मुझे रस नहीं रहा है। युवराज आनन्दकुमार की राज्याभिषेक की तैयारी शीघ्रातिशीघ्र की जाए।

महाराजा ने निवृत्त होने और अपना शेष जीवन आत्महित-साधना में बिताने की बात अंतःपुर में महारानी से भी की। रानी पिछले कितने ही दिनों से महाराजा के मुंह पर छाया विषाद बराबर ही देख रही थी। उन्हें और तो कुछ तर्क विचार नहीं आया। अंतःपुर की चार दीवालों में घिरी रहनेवाली और परिचारिकाओं की सुनाई अच्छी बुरी बातों में ही समस्त संसार का इतिहास समझने वाली यह नारी गतिशील जीवन में आनेवाले आकस्मिक परिवर्तनों को कैसे समझती ? कदाचित् समझती भी तो उसका मूल्यांकन तो वह अपनी ही रीति से कर सकती थी। बस इसी से रानी ने समझ लिया कि महाराजा को अब अपनी लग्नग्रंथी से बंधी हुई सहधर्मिणी की ओर उपेक्षा और औदासान्य आ गया है। इसीलिये उनको यह महल और सगेसंबंधी अब आँख पर की पट्टी जैसे बुरे लगने लग गए हैं।

सब्र न कर सकने के कारण एक बार तो रानी ने ताना मारते हुए कह दिया कि आज कल इतने व्यग्र और चिंताग्रस्त क्यों दिखते हैं और एकांत पाते ही किस विचार से गहरे गोते लगाते हैं ? ऐसा क्या कारण हुआ है? मुझे देखते ही सौहार्द बतानेवाले आप, पास आकर मैं खड़ी रहूं तब भी अब मुझे देखते और सुनते ही नहीं हैं ? क्या किसी मनोरमा ने आपके ऊपर जादूमंत्र तो नहीं कर दिया है ना ?

परन्तु सत्य तो यह था कि जब रानी कुसुमावली धीमे कदमों से आकर इनके पास खड़ी हुई थी तब महाराजा सिंह अपने पिता के महाअभिनिष्क्रमण का ही चिंतन कर रहे थे। पिता पुरुषदत्त ने गुरू अमिततेज के पास अपने सामंतों और मंत्रियों सहित कैसे अहोभाव से दीक्षा ली थी, कैसे संयोगों में उनके ऊपर यह राज्य का भार आया था और उन्हें उस समय कैसा-कैसा लग रहा था इन सब स्मृतियों को ही वे दोहरा रहे थे।

आज जब महाराजा ने अपने जीवनपरिवर्तन की बात विस्तार के साथ कही तो रानी को कुछ अधिक आश्चर्य तो नहीं हुआ था। उसने मात्र इतना ही पूछा कि मुझे किसके आश्रय में आप रखकर जा रहे हैं ?

आनन्दकुमार तो है ना ? और यह कोई ऐसा प्रस्थान तो है नहीं कि तुम्हें भी साथ में लिया जा सके। यह तो तलवार की धार पर चलने का खेल है। ऐसा कहते महाराजा ने रानी के मन को कुछ सांत्वना दी और आश्वस्त किया।

परन्तु माता को अपने पुत्र पर ही तो पूरा विश्वास नहीं था। आनन्द निश्चय ही माता का मान-सम्मान रखता था। जहाँ तक होता उनके दिल को भी वह नहीं दुखाता था। परन्तु माता तो जानती थी कि आनन्द को अभी इन्हीं दिनों में कुसंगति का काला रंग चढ़ना आरम्भ हो गया है।

परन्तु रानी यह बात कह कर अपने पतिदेव को अप्रसन्न करना इस समय नहीं चाहती थी। जिसने संसार त्याग करने का निश्चय ही कर लिया हो उसे ऐसी निकम्मी बातें सुनाकर किस लिए संतप्त किया जाए ?

दोनों कितनी ही देर तक मौन बैठे रहे। अन्त में सिंह महाराजा ही बोले :

विराग की बात जाने दो। परन्तु एक वयोवृद्ध पिता अपने अधिकार और वैभव से चिपका ही बैठा रहे वहां तक युवान पुत्र को तो ऐसा ही लगता रहेगा कि यह बूढ़ा महा अंतराय रूप है। यह बीच में से दूर हो जाए तो ठीक रहे। सामान्य संसारी के जीवन में यह नियम कदाचित् नहीं लागू पड़ता हो परन्तु खटपट से भरे हुए इस राजतंत्र में तो बहुतांश में पुत्र को पिता उसे योग्य अधिकारों से वंचित रखनेवाला ही लगता है न फिर वह कुसंगत में पड़ जाता है।

यही बात कुमार के जन्म प्रसंग में महाराजा ने कहीं थी और वह रानी भूल नहीं गई थी। कुमार के हाथों पिता का कुछ अनिष्ट हो उससे पूर्व ही ये मुक्त हो जाएं इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है यह रानी को समझ में आ गया।

देखो आज से पांचवें दिन कुमार के राज्याभिषेक की तैयारी मैं कर रहा हूँ। मृतिका का पिंड, दही, सरसव, चामर, चोरोचन, सिंह कस चर्म, श्वेत छत्र, पुष्प और भद्रासन जैसी मांगलिक वस्तुएं तैयार रखने का मंत्री को मैंने आदेश दे दिया है। ये कोई मुंह की कोरी बातें ही नहीं हैं निश्चय

ही राज्याभिषेक की तैयारियां की जा रही हैं, ऐसा कुंवर को भी प्रतीत हो जाना चाहिए। इतना कहकर महाराजा ने कुसुमावती के मुख की ओर देखा।

अभिषेक भले ही हो, परन्तु इसके पश्चात् आप जंगल का ही मार्ग लेवें, यही क्यों आप मान बैठे हैं ? क्या थोड़े दिन रुक जाने से नहीं चलेगा? रानी निकट आई आफत को अगली कल पर धकेल देना चाहती थी।

एक बार पक्का निश्चय कर लेने के पश्चात् क्षणमात्र का भी यह प्रमाद कैसे किया जा सकता है? ऐसे प्रमाद से तो कौन जाने जन्म-मरण के कितने ही चक्र बीत गए? पूर्ण बल से इन भवभवांतर के बंधनों को तोड़ने को कटिबद्ध न बनें तो फिर कब बंध जाएं यह कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इतना कहकर महाराजा मौन हो गए। कुसुमावली को यद्यपि बहुत कुछ कहना था परन्तु शब्दों का व्यय करना निरर्थक समझ वह चुप बैठी रही।

शरणागत हुआ दुर्मति यदि शांत बैठा रहे तो लोगों का दिया उसका दुर्मति नाम ही निरर्थक हो जाए ? इसकी शरणागति तो एक ऊपरी दिखावा मात्र थी। उसने जब देखा कि सिंहराज की प्रचंड शक्ति को वह झुका नहीं सकता है और जिसकी सेना को दो-दो बार हराकर हैरान कर चुका है, वह इस बार पूरा बदला चुकाए बिना शांत नहीं होने वाला है। तभी से उसने शरणागति का यह दांभिक आश्रय खोज निकाला था। शरणागति कोई गौरव या सौभाग्य तो समझा नहीं जाता है। दुर्मति को भी अपना वह पराभव डंक के समान सालता था। शरण होकर भी भीतर-भीतर पैर फैलाने का प्रपंच वह रच ही रहा था।

दैवयोग से युवराज आनन्द को उसकी ओट अनायास ही प्राप्त हो गई। आनन्दकुमार अब मुकुट मस्तक पर धरने को अधीर हो गया था। पल का भी विलंब उसको युग जितना असह्य हो गया था।

दुर्मति ने बारूदखाने में चिनगारी रखने का अवसर हाथ में कर ही लिया उसने एक परम हितैषी और स्नेही का रूप धरकर आनन्द से कहा आपके राज्याभिषेक की तैयारियां मुझे प्रपंच रूप लगती हैं। आपको भुलावे

में डालने के लिए ही यह योजना बनाई गई है। जिसने सत्ता का एक बार भी आस्वादन कर लिया हो, सत्ता का मद जिसके रोम-रोम में व्याप्त हो गया हो, वह क्या प्राण जाने तक भी उसका परित्याग कर सकता है? चाहे वह सगा भाई अथवा सगा पिता ही हो। चाहे स्वयं मुद्रिक और वैरागी ही वह अपने को दिखाता हो, परन्तु मेरे मतानुसार तो किसी की दी हुई सत्ता को दानरूप से स्वीकार करना सत्ता के लिये प्रतीक्षा करते हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना आप जैसे वीर पुरुष के लिए शोभनीय नहीं है। मैंने स्वयं इस सिंहासन का स्वाद चखा है। आज आपका शरणागत हूँ। फिर भी उस मधु बिंदु का मोह छूटता नहीं है।

अपने ही आंतरिक भाव यह दुर्मति प्रकट करता हो और अपनी कल्पित सिद्धि का उद्घोष दूर ही दूर से आते सुनता हो वैसे ही आनन्द उस दुर्मति को थोड़ी देर तक आश्चर्य पूर्वक देखता ही रहा।

चार पांच दिन की प्रतीक्षा कर लेने में अपना क्या जाता है? पिता के पास से राज्य की लगाम उचक लेना यह कोई अच्छी बात नहीं है। आनन्द ने श्रृद्धा और अश्रृद्धा मिश्रित भावना से कहा।

युवराज ! अभी आप अनुभवहीन है। मान लीजिए कि पांच दिन बाद आपका, आप धारते हो वैसा राज्याभिषेक हो भी जाए, पिता के आप उत्तराधिकारी बन भी जाए, फिर भी इतना तो आप ध्यान में अवश्य ही रखिए कि एक वर्ष में अथवा पांच वर्ष में भी इस बुढऊ की दख़लअन्दाज़ी हुए बिना नहीं रहनेवाली । जब तक यह जीवित है चाहे यह त्यागी और संयमी बन जाए तो भी उनका प्रभाव रहेगा ही।

अभिषेक पश्चात् भी पिता की जीवितावस्था में वह स्वयम् पूरी-पूरी स्वतंत्रता भोग नहीं सकेगा ऐसा आनन्दकुमार को भी लगा। अनेक राजकुमारों ने इसी कारण से खुलेआम पिता की हत्या कर राजवैभव हस्तगत किया है। इस दुर्मति की बात बिलकुल ही नजर अंदाज करने जैसी तो नहीं है।

दुर्मति ने देखा कि कुमार को विष का प्रभाव होने लगा है। अब अधिक समय व्यतीत करना उचित नहीं है। ऐसा न हो कि उसका यह षड़यंत्र पकड़ा जाए यही भय उसे हुआ।

कुछ देर चुप रहकर फिर दुर्मति ने सूचित कियाः हमें पूज्य राजपिता के रक्त में हाथ तो डुबाना ही नहीं है। मात्र वे बीच में न जाएं इसलिये एक स्थान में उन्हें बंदी कर देने से भी हमारा विचार हुआ काम सहज ही पार पड़ सकता है। अमात्य अथवा सामंत कोई विप्लव करें यह भी भय आपको कोई नहीं रखना चाहिए और फिर मैं तो आपके बगल में सहायता करने को हूँ ही।

परन्तु पिता को बिना सोचे विचारे बंदी कैसे बनाया जाए यही बात मुझे समझ में नहीं आती है। पिता के प्रति श्रद्धा से दुखी होते हुए पुत्र ने कहा।

यह तो बिलकुल ही आसान काम है। उनके सामने नहीं जाकर हम उन्हें ही यहाँ आमंत्रित करेंगे।

क्रमशः

संकलन–

# जैन गुरुओं की सेवा सुरक्षा की पहल करें

संसार के सभी प्रकार के पारिवारिक, सामाजिक, भौतिक साधन सुविधाओं का त्याग, परित्याग कर आध्यात्मिक के माध्यम से आत्म कल्याण के पथ पर अग्रसर होने के लिये साधु संन्यासी वैरागी बनते है। जैन धर्म की परम्परा में इन्हें जैन भगवती दीक्षा कहते है। जैन दीक्षा लेने के बाद बनने वाले जैन साधु साध्वियाँ जैन धर्म के प्रचार-प्रसार एवं जैन तीर्थकरों के उपदेशों को शास्त्रानुमत जन जन तक पहुंचाने के लिये जैन साधु साध्वी आचार संहिता के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान तक पद विहार (पैदल यात्रा) करते रहते हैं। वर्षावास के चातुर्मास के चार महिनों में एक स्थान पर रहकर धर्म आराधना, धर्म प्रभावना, त्याग तपस्या साधना, आराधना, उपासना करते हुए विभिन्न प्रकार के धार्मिक आयोजन समारोहों में व्यस्त रहते हुए जैन धर्म, मानव धर्म, तीर्थंकरों की वाणी संबंधी उपदेश देकर स्वयं का आत्म कल्याण करते ही है वहां जन-जन को आत्म कल्याण की ओर बढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं। वैसे जैन साधु-साध्वियों का धर्म प्रचार का कार्य जीवनभर चलता ही रहता है। चातुर्मास के चार महिनों में एक स्थान पर रहने के बाद इनकी पदयात्रा-विहार निरन्तर चालू रहता है। जिसकी वजह से जैन साधु-साध्वियों का सानिध्य, सत्संग का सभी लोगों को, सभी समुदायों को, सभी छोटे बड़े क्षेत्रों को बराबर मिलता रहता है।

जैन साधु-साध्वी बनने में उम्र निर्धारित नहीं है। बचपन में वैराग्यभाव उत्पन्न हो जाय तब जैन साधु-साध्वी बन जाते है। युवा अवस्था में, प्रौढ़ अवस्था में, वृद्धा अवस्था में जब भी वैराग्य भावों का मन में उदय होता है तो जैन साधु साध्वी बनते रहते है। वैराग्य की भावना कब और किस उम्र

में आ जाय बस जैन भगवती दीक्षा ग्रहण कर जैन साधु-साध्वी बन जाते है। अक्सर बाल्य एवं युवा अवस्था में वैराग्य के भाव उत्पन्न होते है ऐसा जैन साधु-साध्वी बनते देखा गया है। इतिहास इस बात का गवाह भी है। अक्सर इस अवस्था में बनने वाले साधु साध्वी बाल ब्रह्मचारी रहकर अपनी त्यागमय साधना कर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं जैन धर्म में इसकी सबसे बड़ी विशेषता एवं महत्ता रही है।

जैन साधु-साध्वी बनने के बाद उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैदल भ्रमण विहार करना पड़ता है। पैदल यात्रा के दौरान जैन साधु साध्वियों के सामने नाना प्रकार की कठिनाईयां आती रहती हैं। जिसमें विहार प्रवास के समय उबड़-खाबड़ रास्तों, कंटिली झांड़ियों, जंगली जानवरों का भय, एकान्त सुनसान जंगल, कड़ाके की सर्दी, तपती धरती, बलबली लुऐं, आग बरसाती गर्मी, वर्षा, प्रकृति प्रकोप, मानवीय अवहेलना, तिरस्कार, घटना-दुर्घटना, चोर-डकेतों लुटेरों द्वारा परेशान करना, अधर्मियों का आंतक अत्याचार, गोचरी-पानी (खाने-पीने) की असुविधा, शुद्ध आहार पानी का अभाव, विषैले जीव-जन्तुओं की मार आदि से जैन साधु-साध्वियों को सदियों से गुजरना पड़ा है और वर्तमान में भी गुजरते हुए अपने धर्मप्रचार, सत्यमार्ग पर, कल्याण पथ पर बिना डगमगाये अपनी धर्मयात्रा, प्रतिबोध यात्रा, जन कल्याणकारी यात्रा को यथावत जारी रखे रहते है। यही तो जैन धर्म गुरुओं के त्याग मय जीवन में उपसर्ग सहन करने की अभूतपूर्व शक्ति है। जैन साधु साध्वियों को शारीरिक, मानसिक और कई प्रकार के कष्ट पहुंचाने वालों के प्रति भी इनमें राग-द्वेष एवं बदले की भावना के स्थान पर उनके कल्याण के भाव उत्पन्न होते है। यही तो जैन साधु-साध्वियों की जीवनशैली रही है। जिसके कारण जैन धर्मावलम्बी इनके आदर, मान-सम्मान के लिये पलक पांवड़े बिछाये रहते हैं। वहां अजैन भाई-बहन इनके त्याग, वैराग्य मय जीवन पद्धति को जानने के बाद इनके मान सम्मान,

आदर, सत्कार में किसी प्रकार की कमी नहीं रखते है। जिसके कारण पद विहार यात्रा में इनके सामने कठिनाईयां कम आने के अवसर रहते है। लेकिन इसके पश्चात् भी कुछ समाजकंटकों, अधर्मियों, आदतन असामाजिक तत्व जैन साधु-साध्वियों को परेशान करने में बाज नहीं आते हैं। इनका तिरस्कार करते हैं। निन्दा करते है। शारीरिक कष्ट पहुंचाते हैं। मानसिक रूप से त्रस्त भी करते हैं। इन सभी कठिनाईयों से, परेशानियों से, अप्रिय घटनाओं से उबारने के लिये वर्तमान बदले परिपेक्ष्य में जैन धर्म गुरुओं की पद विहार सेवा सुरक्षा की ओर जैन धर्मावलम्बियों को ध्यान देना नितांत आवश्यक ही नहीं बहुत जरूरी है।

जैन साधु-साध्वियों एक स्थान से दूसरे स्थान पर पद विहार (पैदल यात्रा) के समय विहार आरम्भ वाला जैन श्री संघ उन्हें प्राथमिक व्यवस्थाओं के साथ विहार करवा देते है। उसके बाद जहां जैन साधु साध्वी अगले पड़ाव तक पहुंचते है तो वहां का संघ मार्ग में अगवानी कर उनके पद विहार की व्यवस्था संभालते रहते है। यह परम्परा सदियों से चलती आ रही है। इस व्यवस्था में चातुर्मास पर आने वाले साधु-साध्वियों की व्यवस्था चातुर्मास करवाने वाला जैन संघ इनके प्रस्थान स्थल से चातुर्मास स्थान तक आने पर संभालता ही है लेकिन चातुर्मास के बाद के विहार तो एक जैन संघ से दूसरे जैन संघ पर निर्भर रहती है। इस बीच पद विहार मार्ग के बीच जैन बस्तियां, जैन परिवार, जैन लोगों की बस्ती नहीं हो, मार्ग लम्बा हो तो जैन साधु साध्वियों की सेवा, भक्ति, सुरक्षा आदि का प्रश्न उठ खड़ा होता है। कभी कभी ऐसे मार्गों पर असामाजिक तत्वों द्वारा जैन साधु साध्वियों के साथ मारपीट, अभद्र व्यवहार, छीना-झपटी, लूट खचोट, तिरस्कार, अवहेलना, आलोचना आदि करनी पड़ती है। कहीं-कहीं तो इन्हें ठहरने, रात्रि विश्राम के लिये स्थान तक नहीं देते। जिसके कारण जैन साधु साध्वियों में भी भय पैदा होता है जो इनकी साधना, तपस्या आदि में बाधक बन जाता है। इन गंभीर

समस्याओं का कैसे हल हो, समाधान हो जैन धर्मावलम्बियों को गंभीरता से सोच विचार कर इसके हल के उपाय की ओर पहल करनी चाहिए।

पद विहार (पद यात्रा) के दौरान शुद्ध आहार-पानी की समस्या भी जैन साधु साध्वियों के सामने अक्सर आती है। लेकिन जैन धर्म गुरू इस समस्या पर तो उपवास आदि कर काबू पा लेते है। लेकिन पीने के पानी की गंभीर समस्या इनके पद विहार में बड़ी बाधक बनी रहती है। रास्ते की इन कठिनाईयों पर काबू पाने एवं इसके हल के लिये जैन संघ अस्थाई व्यवस्था करते रहते है। कभी कभी ये व्यवस्थाऐं भरोसे के कारण जब अवरूद्ध होती है तो जैन धर्म गुरुओं के सामने गंभीर स्थिति खड़ी कर देती है। चातुर्मास विहार के अतिरिक्त जैन साधु साध्वियों के विहार के लिये जैन संघों को अपनी ओर से स्थाई व्यवस्था के लिये उपाय करने चाहिये। यह समय की मांग है और वक्त का तकाजा है। अन्यथा जैन साधु-साध्वियों के विहार गंभीर हादसा घटना को लेकर उभर सकते है जो कभी न कभी जैन समाज के लिये आलोचना बन सकते है।

वर्तमान बढ़ते यातायात सुविधा, सड़कों की व्यवस्था बढ़ती आबादी के कारण मार्गों पर सरकारी भवनों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के होते हुए जैन साधु-साध्वियों को रात्रि विश्राम की जगह मिल ही जाती है। लेकिन कहीं न कहीं इसकी गंभीर समस्या उत्पन्न होती ही है। वहां अधर्मियों, ईर्ष्यालुओं, असामाजिक तत्वों की बढ़ती संख्या के कारण जैन साधु-साध्वियों की सेवा सुरक्षा का प्रश्न उठता रहता है। कई बार जैन साधु-साध्वियों को ऐसे तत्वों का कोप भाजन भी होना पड़ा है। इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अब जैन धर्मावलम्बियों को अपने धर्मगुरु, जैन साधु-साध्वियों की सेवा सुरक्षा के लिये ठोस कदम उठाने की पहल करनी चाहिये। इसके लिये सभी जैन संघों में जैन धर्म गुरु सेवा सुरक्षा दल का गठन होना चाहिये। जो समय-समय पर जैन साधु-साध्वियों के विहार मार्ग पर उनकी सुध-बुध लेता रहे।

ऐसा एक संघ करते हुए दूसरे जैन संघ को साधु-साध्वियों की सेवा सुरक्षा का भार आगे से ागे सौंपते हुए करें तो जैन धर्मगुरु साधु-साध्वियों के मार्ग विहार में आने वाली कठिनाईयों, असुरक्षा से मुक्ति पाई जा सकती है।

भारत के समस्त छोटे-बड़े जैन संघों में संघ स्वयं के मंच से अन्य कई जैन संस्थाओं के माध्यम से जैन साधु-साध्वियों के पद विहार में मार्ग में भक्ति, सेवा, सुरक्षा का प्रबन्ध किया जाता ही है यदि संगठित एवं व्यवस्थित तौर पर, कार्यशील स्वरूप में जैन धर्म गुरू सेवा सुरक्षा दल जैन संघ में, सभी जैन सम्प्रदाय-पंथ-गच्छ के प्रतिनिधित्व के साथ बन जाये तो उम्मीद की जाती है कि ऐसे दल के उत्साही युवक-युवतियां जैन धर्म गुरु, साधु-साध्वियों की भक्ति में मार्ग सेवा सुरक्षा के सभी आयाम कर सकेंगे। जिसके कारण मार्ग विहार में जैन साधु-साध्वियों की सेवा, भक्ति एवं सुरक्षा को किसी प्रकार की आंच नहीं आये। इस दल के सदस्यों का सक्रिय एवं सेवाभावी होना भी जरूरी है। जब भी किसी भी गच्छ, समुदाय, सम्प्रदाय के जैन साधु-साध्वियों को अपने यहां पधारने की सूचना मिले तब दल के दो-चार-छः आगेवान सेवा भावी युवक-युवतियों को इनके मार्ग की सेवा सुरक्षा की व्यवस्था में सक्रिय हो जाना चाहिये। जब जैन धर्म गुरु अपने यहां से आगे विहार करें तो अगले क्षेत्र के दल को कार्यभार सौंप देने की पहल करनी चाहिये।

पदयात्रा के लम्बे विहार, बीच में जैन बस्तियों का भवन, विश्राम स्थलों की कमी आती है तो वहां के मार्गों के बीच जैन धर्मावलम्बियों, जैन संघों, जैन संस्थाओं, जैन तीर्थ आदि की सार्वजनिक विश्रामगृह, सार्वजनिक शिक्षण संस्था आदि के रूप में सरकार से अनुबद्ध कर भवन बनाने चाहिये उसमें जैन साधु साध्वियों के मार्ग विहार में उपयोग लेने के शर्तनामा रखें

ताकि जैन साधु-साध्वियों को मार्ग विहार में अस्थाई ठहरने की सुविधा मिल सकें। यदि स्वतंत्र रूप से जैन धर्मशाला आदि ऐसे मार्गों पर बनती है तो उसका कहना ही क्या !

जैन धर्मगुरु जैन साधु-साध्वियों के मार्ग विहार जितने सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित होंगे उतनी ही उन्हें पद विहार यात्रा में सुविधा मिलेगी। इससे उन्हें जैन धर्म का, जैन सिद्धान्तों का, तीर्थंकर वाणी का व्यापक प्रचार-प्रसार करने में मानसिक संतोष भी मिलेगा और जैन धर्म जन-जन को आत्म कल्याण की ओर प्रेरित करने में सहायक बन सकेगा। बस इसके लिये जैन धर्मावलम्बियों को जैन धर्मगुरु साधु-साध्वियों के मार्ग विहार पद यात्रा की सेवा सुरक्षा के माकूल प्रबंध करना है। इससे जैन धर्म की ख्याति एवं विश्वसनीयता और अधिक बढ़ेगी।

भूरचन्द जैन

**NAHAR**
**5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,**
**Kolkata - 700 020**
**Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757**

**BOYD SMITHS PVT. LTD.**
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

**KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA**
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

**M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY**
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

**SURANA MOTORS PVT. LTD.**
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

**SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA**
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

**ASHOK KUMAR RAIDANI**
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

**IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI**
**VINAYMATI SINGHVI**
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

**GLOBE TRAVELS**
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

**APRAJITA**
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

**DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)**
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

**LALCHAND DHARAMCHAND**
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

**TARUN TEXTILES (P) LTD.**
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

**AJAY DAGA, AJAY TRADERS**
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

**COMPUTER EXCHANGE**
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

**SUNDERLAL DUGAR**
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

**AMRITLAL & CO.**
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

**ARBEITS INDIA**
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

**PSCO**
**MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.**
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

**M/S. POLY UDYOG**
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

**SAROJ DUGAR**
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

**VEEKEY ELECTRONICS**
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

**KRISHNA JUTE COMPANY**
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

**ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.**
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

**BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA**
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

**MOUJIRAM PANNALAL**
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

**ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION**
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

**NAKODA METAL**
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

**MUSICAL FILMS (P) LTD**
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

**SAGAR MAL SURESH KUMAR**
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

**B.W.M.INTERNATIONAL**
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

**DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON**
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

**V.S. JAIN**
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

**RANJIT SINGHI**
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

**RAJIB DOOGAR**
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

**SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR**
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

**M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.**
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

**M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.**
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
**WITH BEST WISHES**

**DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA**
*Dealers in Diamond*
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

**DHANDHIA BROS**
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

**In the Sweet Memory of my mother**
**LATE SOVABOTI DUSAJ**
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

**With Best Compliment from :-**
**SURANA WOOLEN PVT. LTD.**
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

**In the memory of Badindrapat Singhji Dugar**
**GAUTAM DUGAR**
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

**ARIHANT JEWELLERS**
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

**M/s. MUKUND JEWELLERS**
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

**KAMAL SINGH KARNAWAT**
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

**N. K. JEWELLERS**
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

**RATAN LAL DUNGARIA**
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

**M/S. PARSON BROTHERS**
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

**KESARIA & CO.**
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
**INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES**
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

**M.L. CHOPRA & CO.**
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

**With Best Compliments From-**
**STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS**
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

**ABL INTERNATIONAL LTD.**
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

**SHIV KUMAR JAIN**
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

**MAHENDRA TATER**
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

**M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.**
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

**APARAJITA BOYED**
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

**SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI**
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

**BADALIA GEMS PVT. LTD.**
**BADALIA HOUSE**
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

**CREATIVE**
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

**JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS**
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

**DR. G. C. GULGULIA**
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

**CALTRONIX**
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

**PABITRA KUMAR DOOGAR**
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

**SHRI VIJAY NAHATA**
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
**Jyoti Kumar Kuthari**
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
**Ranjan Kumar Kuthari**
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

**With Best Compliments from :-**
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
**CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346**
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
**Garden Cafe Take Away :** Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

# KUSUM CHANACHUR

**Founder : Late. Sikhar Chand Churoria**

Kusum
QUALITY PRODUCT

## Our Quality Product of :

| | |
|---|---|
| Anusandhan | Bhaonagari Ghantia |
| Kolkata Nasta | Jocker |
| Badsha Khan | Lajawab |
| Picnic | Papri Ghantia |
| Raja | Rim Jhim |
| Shubham | Tinku |

**MANUFACTURED BY**

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

**KOLKATA ADDRESS:**

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

**THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED**

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

| | **Phone:** |
|---|---|
| Gram "GANGJUTMIL" | 2226-0881 |
| Fax: + 91-33-245-7591 | 2226-0883 |
| Telex: 021-2101 GANG IN | 2226-6283 |
| | 2226-6953 |

**Mill**

**BANSBERIA**

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

**BHANSALI**

Quality. Innovation. Reliability

**BHANSALI UDYOG PVT. LTD.**
**(Formerly: Laxman Singh Jariwala)**
**Balwant Jain** - Chairman

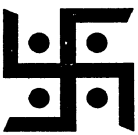

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

**मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।**

**अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।**

अनाम

# PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 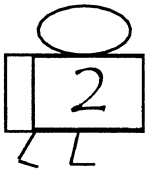 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

**NAHAR PARK**
**45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025**
**(Near Jadu Babu's Bazar)**
**Phone: 24544696**

**Store Timings : 7.00 am to 9pm**
**All days open except Thursday**

**All Prices BELOW M.R.P.**

**FREE HOME DELIVERY**

**PARKING AVAILABLE**

# 28 water supply schemes
# 315,000 metres of pipelines
# 110,000 kilowatts of pumping stations
# 180,000 million litres of treated water
# 13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

# SPML

**Engineering Life**

## SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

**With Best Compliments**

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

# B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

**22, Camac Street**
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 3 TITTHAYARA June 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

**Kamal Singh Rampuria**
**Rampuria Mansions**

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225